इस्लाम की अपनी बेटियों से गुफ्तगु

इस किताब में हम पढ़ेंगेः

- दुख़्तराने इस्लाम की इल्मी तड़प
- दुख़्तराने इस्लाम का निसाबे ज़िंदगी
- “मारूफ” में शामिल काम
- औरत अच्छाई या बुराई के पैमाने में
- जन्नती महल
- दर्से रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
- बुलंद हौसला ख़ातून
- उम्मुल मोमीनीन रदियल्लाहु अन्हा का अमले मुबारक़
- ख़ातूने जन्नत सरकारे कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वक़्ते विसाल
- एक सवाल एक तड़प
- अज़ीम बाप की अज़ीम बेटी के लफ्ज़
- औरत और लिबास
- औलाद का पहला सबक़
- अजीब हक़ महरः
- बीन की मुमानअत (मनाही)
- शादी की तक़रीबात और दुक्ख़्तराने इस्लाम

तक़रीरः डॉ.मुहम्मद अशरफ आसिफ जलाली साहब

email: labbaikyarasoolallah_indore@rediffmail.com

मदनी इल्तिजाः इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो ब-ज़रिअ़ए ईमेल मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْاَنْبِيَاءِ
وَالْمُرْسَلِيْنَ وَعَلٰى آلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَ اَهْلِ بَيْتِهٖ وَ اَوْلِيَاءِ اُمَّتِهٖ اَجْمَعِيْنَ۔
اَمَّا بَعْدُ

فاعوذ باللہ من الشیطان الرجیم

بسم اللہ الرحمن الرحیم

يٰاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰى أَن لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْئًا
وَّ لَا يَسْرِقْنَ وَ لَا يَزْنِيْنَ وَ لَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَ لَا يَأْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ
بَيْنَ أَيْدِيْهِنَّ وَ أَرْجُلِهِنَّ وَ لَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَ اسْتَغْفِرْ
لَهُنَّ اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

(پارہ نمبر 28، سورۃ الممتحنۃ، سورت نمبر 60، آیت نمبر 12)

صَدَقَ اللّٰهُ الْعَظِيْمُ وَ صَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ الْاَمِيْنُ

اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ
وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاسَيِّدِىْ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ
وَعَلٰى آلِكَ وَاَصْحَابِكَ يَاسَيِّدِىْ يَا حَبِيْبَ اللّٰهِ
مَوْلَاىَ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا
عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

इस्लाम की अपनी बेटियों से गुफ्तगु

अल्लाह तबारक व तआला की हम्दो सना और हुज़ूरे अकरम,नूरे मुजस्सम,शफीअ ए मेहशर, मालिके कौसर, बेहबूबे दिलबर, अहमदे मुजतबा, जनाबे मुहम्मदे मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में दुरूदो सलाम अर्ज़ करने के बाद–

वारिसाने मिंबरो मेहराब, अरबाबे फिक्रो दानिश, अस्हाबे मुहब्बत व मवद्दत, हामीलीने अक़ीदा ए अहले सुन्नत, निहायत ही मोहतशिम व मोअज़्ज़िज़ हज़रातो ख़वातीन! रब्बे ज़ुलजलाल के फज़्ल और तौफीक़ से आज हमारी गुफ्तगु का मोज़ू (टॉपिक,सबक़) है " **इस्लाम की अपनी बेटियों से गुफ्तगु**" मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला हम सब को कुरआने मजीद का फहम अता फरमाए और इस के इब्लागो़ तब्लीग़ और इस पे अमल की तौफीक़ अता फरमाए– अल्लाह तआला आज हमारी हाज़िरी को हमारे लाखों दुखों का मदावा बनाए और हमारे गुनाहों का कफ्फारा बनाए और हमारे जन्नत में जाने का सबब बनाए–

इस्लाम ने पहले दिन से ही मर्दों के साथ साथ औरतों की तालीम व तर्बियत पर खुसूसी तवज्जो दी है, रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ख़्वातीने इस्लाम मुख़्तलिफ मसाईल के इस्तिफ्सार के लिये पहुँचती और नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने अब्रे करम से उन की तिश्नगी (इल्म की प्यास) को बुझाते और उन के क़ल्ब व नज़र को सैराब फरमा देते थे–

दुख़्तराने इस्लाम की तड़पः

हज़रते अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि– एक सहाबिया रदियल्लाहु अन्हा नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आईं। उन्होने आकर कहा कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैक़ा वसल्लमा! मर्द हज़रात को यह सुनेहरा मोका मयस्सर है (मिलता है) कि आप की बातें सुनते हैं और उन को याद करते हैं, जबकि हमें इतना वक़्त नही मिलता ,उन को ज़्यादा वक़्त मिल रहा है और वे आप के फरामीन को ज़्यादा याद कर रहे हैं, तो मै औरतों की तरफ से नुमाईंदा बन के आई हूँ, हमारा भी हक़ है और हमारा एक तक़ाज़ा है किः " एक दिन हमें अता फरमा दें, यानी सात दिनों में से एक दिन हमें दे दें, उस दिन हम आप के पास हाज़िर रहें , जो रब ने आप को सिखाया है, आप उस में से हमें भी इनायत फरमाएं।

उस ख़ातूने इस्लामी ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने अपनी एक इल्मी तड़प का इज़हार किया, जिस से पता चलता है कि उस वक़्त दुख़्तराने इस्लाम में किस कदर दीने इस्लाम की तड़प थी। आज मग़रिब–ज़दा औरतें जो हुक़ूक़ माँगती हैं कि मर्दों को ये मिला है तो हमें भी ये मिले, उस में वो बातें अजीबो ग़रीब होती हैं जिन का वो मग़रिब–ज़दा औरतें तक़ाज़ा कर रही होती हैं। उन के लिये थियेटर (सिनेमा हाल) खुल गए हैं, हमारे लिये भी होना चाहिए। मगर उस वक़्त दुख़्तराने इस्लाम सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरबार में मौजूद हैं और कहती हैं कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैक़ा वसल्लम! मर्दों को ये वक़्त मिल रहा है कि उन की आँखों के कटोरे आप के हुस्न के समन्दर से लबरेज़ हैं और मर्दों के कान आपके कीमती अल्फाज़ के फूलों को चुनने में मसरूफ रहते हैं और उनके क़ल्बो नज़र पर आप के चेहरे की तजल्ली पड़ती है और आप के अल्फाज़ याद कर के वह अपने सीनों को मुनव्वर करते

हैं , तो एक दिन हमें भी अता फरमा दें कि जो सिर्फ हमारा दिन हो, उस दिन हमारी क्लास लगे, आप इर्शाद फरमाएं और हम सुनें, हम याद करें और हम आगे पहुँचाएं। ये ख़ातूने इस्लामी की तड़प थी , रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन की इस दरख़्वास्त पे तवज्जो करते हुए फौरन फैसला फरमा दिया कि: तुम फलां दिन और फलां जगह जमा हो जाओ, मुझे मेरे रब ने जो इल्म अता फरमाया है उस से तुम्हें भी हिस्सा अता फरमाउँगा– रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें बक़ाईदा वक़्त दिया, बक़ाईदा उन्होंने (ख़्वातीने इस्लाम ने) अपना हिस्सा माँगा और फिर उन को सिखाया। सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहले भी उन पे निग़ाहे इनायत फरमा रहे थे, अब बतौरे ख़ास उन के लिये दिन मुकर्रर/ मोईय्यन हो गया , वक़्त को मोईय्यन कर दिया गया कि ये दिन तुम्हारी क्लास का दिन है, इस में तुम को आना है,इस में तुम्हारे सामने अल्लाह तआला के दिये हुए इल्म से मै बयान करूँगा, तुम उसे याद कर के अपनी नस्ल तक उस इल्म को पहुँचाना।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस सिलसिले के मुख़्तलिफ ख़ुतबात हैं, जो सेकड़ों हैं जिनमें दुख़्तराने इस्लाम को बराहे–रास्त ख़िताब करते हुए उन को मुख़्तलिफ अहकाम पर मुत्तलेअ (ख़बरदार) किया और उनकी इल्मी हैसियत की तामीर की। वि ख़्वातीन जो पहले आम सा इल्म रखती थी, उनमें से कोई मुफस्सिरा बन गई, कोई मोहद्दिसा बन गई और कोई फक़ीहा बन गई।
ये अंदाज़ उन ख़्वातीने इस्लाम को अल्लाह तआला ने अता किया कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आमद से कब्ल जिन का नाम सिवाए जहालत व हिक़ारत के कुछ न था, रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन को मुक़ाम भी दिया और अपनी तरफ से उलूम का एक निसाब भी अता फरमाया–

दुख़्तराने इस्लाम का निसाबे ज़िंदगी:
इस सिलसिले में कुरआने मजीद की सूरह नंबर 60 (सूरह मुमतहाना) में एक ख़ास अहद का ज़िक्र है जो औरतों से लिया गया कि वह इस पर बैत कर लें और नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से वादा करें कि सारी ज़िंदगी इस पर अमल करती रहेंगी और इस को अपनी ज़िंदगी का मुकम्मल निसाब बनाएंगी– कुरआने मजीद में है कि–

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓي اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْئًا وَّ لَا يَسْرِقْنَ وَ لَا يَزْنِيْنَ وَ لَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَ لَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ وَ اَرْجُلِهِنَّ وَ لَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَ اسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (١٢)

कुरआन सूरह नंबर 60 (सूरह मुमतहाना)

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ

(तर्जुमा: ऐ नबी जब तुम्हारे हुज़ूर मुसलमान औरतें हाज़िर हों)

يُبَايِعْنَكَ

(तर्जुमा: इस पर बैत करने को)

عَلٰٓي اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْئًا

(तर्जुमा: वह अल्लाह का शरीक न ठहराएंगी)

وَ لَا يَسْرِقْنَ

(तर्जुमा: और न चोरी करेंगी)

وَ لَا يَزْنِيْنَ

(तर्जुमा: और न बदकारी)

وَ لَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَہُنَّ

(तर्जुमा: और न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी)

मोमिनात ये अहद करें कि वो न शिर्क करेंगी, न चोरी करेंगी , न बदकारी करेंगी और न ही अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी।

↴ وَ لَا يَاْتِيْنَ بِبُہْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَہٗ بَيْنَ اَيْدِيْہِنَّ وَ اَرْجُلِہِنَّ

(तर्जुमा: और न ये बोहतान लाएंगी जिसे अपने हाथों और पाउँ के दरमियान यानी मुज़ए विलादत में उठाएं)

इस का मतलब ये है कि उस वक़्त कोई बाँझ औरत किसी का बच्चा उठा कर ले जाती और अपने ख़ाविन्द (शोहर) से कहती कि ये मेरे यहाँ पैदा हुआ है (यानी जब शोहर सफर से लौट के आता तो वह किसी और के बच्चे को ये ज़ाहिर करवाती कि मेने इस को जन्म दिया है और ये तेरा बच्चा है। इस तरह की वारदातें होती थीं, तो अल्लाह तआला ने फरमाया कि उन औरतों से बैत कर लो कि ऐसा काम इस्लाम की कोई बेटी न करे।

وَ لَا يَعْصِيْنَکَ فِىْ مَعْرُوْفٍ

(तर्जुमा: और किसी नेक बात में तुम्हारी नाफरमानी न करेंगी)

इस में हर चीज़ दाख़िल होगी कि जो भी अच्छाई का काम है ये औरतें जो शौक़ से कलिमा पढ़ रही हैं उन से कहो कि तुम मारूफ (अच्छे काम) में मेरी मुख़ालिफत नही करोगी।

<u>“मारूफ” में शामिल काम:</u>

इस सिलसिले में मोहद्दिसीन का कौल है कि “मारूफ” में जो बैत हो रही थी तो वह ये थी कि:

मर्ग़ के वक़्त चेहरा नही नोचेंगी,मातम नही करेंगी, हाय हाय नही करेंगी, गिरेबान नही फाड़ेंगी, और न ही चिल्लाएंगी, सारी ज़िंदगी अपने बालों को नंगा नही होने देंगी और अपने बाल बिखरने नही देंगी और उनके बाल किसी को नज़र नही आएंगे। इस पर वो बैत करें कि हमारे बाल किसी को नज़र नही आएंगे और किसी की नज़र हमारे बालों पर नही पड़ेगी। और सारी ज़िंदगी किसी ग़ैर मेहरम से गुफ्तगू नही करेंगी यानी इस बात पर बैत करें कि वह किसी ना मेहरम से नही बोलेंगी। (तफसीरे कुरतुबी)

अगर ये ऐसी बात करने जाए فَبَايِعْہُنَّ तो फिर उन की बैत वसूल कर लो ,अगर ये बैत इस पर करना चाहती हैं ईमान की ख़ातिर तो आप उन से बैत वसूल कर लो اسْتَغْفِرْ لَہُنَّ اللہ और फिर अल्लाह तआला से उन के गुनाहों की मग़फिरत की दरख़्वास्त भी करो। जो ख़्वातीन इस पर बैत कर रही हैं, इस से पहले (मेरा फरमान पहुँचने से पहले) जो कुछ हो चुका है, तो ऐ मेहबूब सल्लल्लाहु अलैक़ा वसल्लम! तुम मुझ से कहो तो मै उन को माफ कर दूँगा यानि जिस को माफ करना है वह कहता है कि मेहबूब तुम मुझ से कहो اسْتَغْفِرْ لَہُنَّ اللہ → ए मेहबूब! आप उन के लिये इस्तिग़्फार की दुआ अल्लाह

तआला से करें और आप उन के लिये मग़फ़िरत तलब करें। तो फिर क्या होगा ?

→ اِنَّ اللہَ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ

(तर्जुमाः बेशक अल्लाह तआला बख़्शने वाला, मेहरबान है)

<u>औरत अच्छाई या बुराई के पैमाने में</u>

कुरआने मजीद हमारे घरों में मौजूद है, जिस वक़्त कोई बाप अपनी बेटी को रुख़सत करता है तो वह कुरआने मजीद के साये में रुख़सत करता है, कुरआने मजीद जहेज़ में दिया जाता है, ये एक रस्म है जो अदा की जाती है। लेकिन हक़ीक़त ये है कि जो कुरआने मजीद कहता है उस को समझा जाए, उस के मुताबिक अमल किया जाए। इस सूरह मुमतहाना की आयत नंबर 12 का जो तक़ाज़ा है उस को अगर कोई इस्लाम की बेटी सामने रखे तो उस की पूरी ज़िंदगी नूर से भर जाएगी। थोड़ी सी उस को पाबंदी करना पड़ेगी, थोड़ा सा अपने आप को संभालना पड़ेगा। अगर औरत बिगड़ गई तो मुआशरे का सबसे बड़ा फितना है और शैतान का जाल है और उस को शैतान का ज़हरीला काँटा (या तीर) करार दिया गया और उस को फित्नों की माँ कह दिया गया।

यही ख़ातून मोमिना बनी और फिर उसने अपने आप को संभाला और कुरआने मजीद के साये में रही और हज़रते सय्यिदा आयशा सिद्दिक़ा रदियल्लाहु अन्हा की तालीमात का ज़ेवर पहना और हज़रते सय्यिदा फातिमा रदियल्लाहु अन्हा की चादर के साये में रही तो फिर उस को सादिक़ा कहा गया, उस को क़ानिता कहा गया, उस को साबिरा कहा गया, उस को साइमा कहा गया, उस को साजिदा कहा गया, उस को राकिआ कहा गया, यही नस्ले नो का बहुत बड़ा मज़हर करार पाई, यही इंसानी नस्ल के निख़ार का बहुत बड़ा मम्बा और खेत करार पाई, उसी से तक़्वा के फूल खिले,उसी से परहेज़गारी की बहार आई, यही सालेहीन की माँ कहलाई, उसी की गौद को जन्नत के मनाज़िर में से एक मंज़र कहा गया, उसी की तर्बियत को इंसान की बहुत बड़ी दर्सगाह करार दिया गया और उस एक औरत के शुस्ता/ एक्टिव किरदार को 70 सिद्दीकों से बड़ा किरदार करार दिया गया। क्योंकि उस ने कुरआने मजीद सीखा है और कुरआने मजीद को सुना हे, नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान को सुन के पूरी ज़िंदगी उन फरामीन ए मुस्तफा के ज़ेरे साया बसर कर डाली है।

एक तरफ आज का माहौल, मोबाईल का इस्तेमाल, उस में पेकेजेज़ और घंटों ग़ैर मेहरमों से बातें, इधर कुरआने मजीद का फरमान है कि: وَ لَا یَعۡصِیۡنَکَ فِیۡ مَعۡرُوۡفٍ म` र` मेहबूब जिस ने तेरा कलिमा पढ़ा है वह ज़िंदगी भर ग़ैर मेहरम से नही बोलेगी, उस की किसी ना–मेहरम से बात नही होगी, उन से ये बैत वसूल करो और ये बैत लाज़िम है।

इधर एक जुमला भी ग़ैर मेहरम से बोलना हराम है सिवाए उस मरीज़ा के जो अपना मर्ज़ बताना चाहती है, या किसी हाकि़म के सामने गवाही देना चाहती है, सिर्फ उन चन्द सूरतों में रुख़सत है। आज (मआज़ अल्लाह) ग़ैर मेहरम से बातें करने को गुनाह नही समझा जा रहा और फिर टाईम के साथ साथ अपना ईमान ज़ाया किया जा रहा है। इध
र किसी ग़ैर मेहरम से बोलना हराम कर दिया गया और अपनी दिली रग़बत की बुनियाद पर बोलना और बातें करना, इस को नाजाइज़ करार दिया गया और सय्यदे आलम सल्लल

लाहु अलैहि वसल्लम ने एक दुख़्तरे इस्लाम को बताया कि घर में कैसे रहना है और बाहर कैसे निकलना है, अगर घर में किसी की मौत का वक़्त है तो उस वक़्त कैसे रहना है, अगर शादी का मोका हो तो फिर कैसे रहना है–

आज (मआज़ अल्लाह) ये समझ लिया गया है कि शादी का मोका होता है तो उस मोके पे गोया एक मोमिना, मोमिना नही रहती, यानी उस को इस वक़्त छुट्टी दे दी गई है। पता ही नही चलता है कि ईसायन या डायन है, या कोई मुसलमान ख़ातून है। कोई यदूदिया है या कोई मोमिना। शादी की तक़रीबात को अपनी ज़िंदगी से यूँ ख़ारिज करार दिया जाता है गोया कि जो इस्लाम के तक़ाज़े थे वो बाक़ी ज़िंदगी में थे, आज का दिन उस से बरी है। इस में छोटे बड़े सारे शरीक़ होते हैं। शरीअत की ख़िलाफवर्ज़ी की लहर में अक़्सर हाजी और नमाज़ी भी बह जाते हैं। मगर जिसे अल्लाह बचाए। और फिर जिस वक़्त कोई मर्ग़ या अफसोस वग़ैरह का मोका होता है तो उस वक़्त जो बेसब्री और इस्लामी अहक़ामात की ख़िलाफवर्ज़ी होती है, वह एक अलेहदा अलमिया है।

आज इस वक़्त ये पैग़ाम वसूल करते हुए, कुरआने मजीद के फरामीन हमारे सामने हैं और ध्यान हमारा उस की तरफ है, अल्लाह तआला की मग़फिरत की बारिश बरस रही है और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निग़ाहे नाज़ गुंबदे ख़िज़रा से अपनी उम्मत को देख रही है, ऐसे में दुख़्तराने इस्लाम को अहद भी करना है और हम सब को इन अहकामात को समझना भी है लेकिन सिर्फ कानों की लज़्ज़त के लिये नही बल्कि ईमान के वक़ार के लिये और ईमान की बहार के लिये कि चलो जब तक पता नही था कोई और मामला था हांलाकि ये लाज़िम है कि जिस वक़्त कोई बालिग़ हो जाए, मर्द हो या औरत, तो जैसे नमाज़ फर्ज़ है ऐसे ही ज़िंदगी गुज़ारने का रस्ता जानना भी फर्ज़ है, जो नही पूछती और नही जानती वह मुजरिमा होगी और जो मर्द नही पूछता वह भी मुजरिम होगा।

अब कुरआने मजीद और रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरामीन और जिन हस्तियों को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सिखाया उन का किरदार मुख़तसर सा पेश कर रहा हूँ ताकि मेरे लिये भी ज़रीया ए निजात बन जाए और आप सब के लिये भी ज़रीया ए निजात बन जाए।

जन्नती महल

सब से मुश्किल वक़्त वो होता है जब किसी का बाप फौत हो गया हो, किसी की माँ फौत हो गई हो, किसी का बेटा फौत हो गया हो, उस वक़्त कुछ लोग कह देते हैं कि हमें कुछ न कहो जो कुछ हम से होता है वह हम करते हैं , जो कुछ ज़ुबान पे आता है वह कहते हैं, शिकवा और गिले रव से करते हैं, जिस से ये पता नही चलता कि उस ने रब को माना भी है या नही माना, उस ने जब बच्चा दिया था तो उसने कोई कीमत वसूल नही की थी , अब अगर उस के दुनिया से चले जाने पर अपने रब से झगड़े और शिकायत करे तो फिर अल्लह तआला नाराज़ हो जाएगा। और जहाँ सब्र का मंज़र होगा तो अल्लाह तआला फरिश्तों से कहेगा कि: जिन्होने बच्चे की मय्यत पे खड़े हो के सब्र किया , फरिश्तों! उन के लिये नया महल जन्नत में तैय्यार करो और उस का नाम बैतुल हम्द रखो और कहो कि यह वह घर है जो बाप को सब्र करने पर मिल जाता है। (शोअबुल ईमान)

दर्स रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम:

रसूले अकरम सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम की बारगाह में एक साहबिया रदियल्लाहु अन्हा आईं, वह आप का यह दर्स सुन चुकी थी कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया है कि " لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَطَمَ الْخُدُودَ، وَشَقَّ الْجُيُوبَ، وَدَعَا بِدَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ "" वह औरत मेरी उम्मत में नही है, वह हमारी नही, वह हम में से नही ,वह हमारे तरीक़े पर नही

لَيْسَ مِنَّا →वह हम में से नही, वह हमारे तरीक़े से खुद निकल गई।

مَنْ لَطَمَ الْخُدُودَ →जिस ने मुश्किल घड़ी में अपने चेहरे को पीटना शुरू कर दिया और अपने रुख़सारों पर मारना शुरू कर दिया तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जिस ने ऐसा किया वो उम्मत से खुद निकल गई–

شَقَّ الْجُيُوبَ، →जिस ने गिरेबान फाड़ा

ये ख़्वातीन में आदतें हैं कि वह बे–सब्री में कपड़े फाड़ देती है, जिस ने ऐसे वक़्त में बे–सब्री से काम लेकर गिरेबान फाड़ा वह मेरी उम्मत में से नही। ये कितना बड़ा जुमला और झिड़की है और कितना झिनझोड़ रहे हैं, जो मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सारे जहाँनों के लिये रहमत बन कर आए हैं और जो ज़र्रे ज़र्रे पे अब्रे करम बन के बरसे हैं और जिन्होने देखा कि इंसानियत जहन्नम में जा रही है, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि

فَأَنَا آخُذُ بِحُجَزِكُمْ عَنِ النَّارِ، →तुम पतंगों की तरह छलांग लगा कर जहन्नम में जा रहे थे तो मेने तुम्हे कमर से पकड़ लिया और तुम्हे जहन्नम में नही जाने दूँगा। और तुम हो कि उसी में गिरते जाते हो।⤵

حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّهُ حَدَّثَهُ أَنَّهُ، سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ ـ رضى الله عنه ـ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ " إِنَّمَا مَثَلِي وَمَثَلُ النَّاسِ كَمَثَلِ رَجُلٍ اسْتَوْقَدَ نَارًا، فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ جَعَلَ الْفَرَاشُ وَهَذِهِ الدَّوَابُّ الَّتِي تَقَعُ فِي النَّارِ يَقَعْنَ فِيهَا، فَجَعَلَ يَنْزِعُهُنَّ وَيَغْلِبْنَهُ فَيَقْتَحِمْنَ فِيهَا، فَأَنَا آخُذُ بِحُجَزِكُمْ عَنِ النَّارِ، وَأَنْتُمْ تَقْتَحِمُونَ فِيهَا ".(सहीह बुख़ारी शरीफ 6483)

जिस औरत ने कलिमा ए इस्लाम पढ़ लिया , अब वाह इस मौके पे अपना गिरेबान न फाड़े। ये दोनों का निसाब है यानी मर्द और औरत का , मर्द ये न समझे कि हमारे लिये खुली छुट्टी है। लेकिन चुँकि ऐसे ज़्यादातर वाक़िआत औरतों से सरज़द होते हैं, इस लिये उन का ज़िक्र किया गया है।

شَقَّ الْجُيُوبَ، →"जिस ने गिरेबान फाड़ा वि हम में से नही"

इस का दूसरा मतलब ये है कि जिस ने कमीज़ के सामने गिरेबान बनवा लिया,जो बटन खुले रहने की सूरत में बेपरदगी का बाइस है, वह इस्लाम की बेटी नही है।

شَقَّ الْجُيُوبَ، →जिसने कमीज़ में सिर डालने के लिये गिरेबान सामने बनाया वह इस्लाम की बेटी नही है।

وَدَعَا بِدَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ →अपने भाई या बेटे की वफात पर कहना कि तू कितना अच्छा था और अल्लाह तआला ने तुझे दुनिया से उठा कर कितना नुकसान किया। अल्लाह

तआला को (मआज़ अल्लाह) तेरी कितनी ज़रूरत थी। इस तरह फौत शुदा की तारीफ करना और अल्लाह तआला के बारे में ये कहना कि (मआज़ अल्लाह) अल्लाह को फौत हुए इंसान की ज़रूरत थी। जो औरत किसी के मर जाने पर इस अंदाज़ में आहो बक़ा या इस किस्म के अल्फाज़ इस्तेमाल करेगी, इस अमल को सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने "دَعا بِدَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ" कहा है कि ये जाहिलियत की बातें हैं। जिस ने ऐसा किया तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि उस का तआल्लुक मेरी उम्मत से नही है । मेरी उम्मत में तो वो साबीरा, शाकीरा है कि जिस पर ऐसा वक़्त आ गया तो उस ने अल्लाह का शुक्र अदा किया।

आँखों में आँसू आने पर शरीअत मे पाबंदी नही है, हालते इज़तिराब में जो आवाज़ निकल जाए उस पर भी पाबंदी नही है लेकिन (मआज़ अल्लाह) अल्लाह को कोसना,दिगर अल्फाज़ और जुमले और ज़ोर ज़ोर से आवाज़े बुलंद करना इस से मना किया गया है और फिर अल्लाह तआला को जो ताने दिये जाते हैं और अल्लाह तआला से शिकवे किये जाते हैं, उस से बतौरे ख़ास नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना किया और इर्शाद फरमाया कि जिस ने ऐसा किया वो हम में से नही , उस ने हमारे तरीक़े को छोड़ कर जाहिलियत के तरीक़े को अपना लिया।

बुलंद हौसला ख़ातून

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस तक़रीर का असर कितना हुआ कि मदीना शरीफ में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ फरमा थे कि एक ख़ातून आ गई, उस का नाम "उम्मे खुलाद" था वह उस मौके पे आईं कि उन का बेटा जंग में शहीद हो गया। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वापस तशरीफ ले आए तो ये हज़रत उम्मे खुलाद रदियल्लाहु अन्हा नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आ गईं। जिस वक़्त नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास वो सहाबिया आईं तो सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम को बड़ा तआज्जुब हुआ कि माँ हो और फिर उसका बेटा फौत हो चुका हो, न ही ही बेटे का चेहरा देखा हो। जिस वक़्त हज़रत उम्मे खुलाद रदियल्लाहु अन्हा नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरबार में पहुँची , सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम कहते हैं कि: उस ने चेहरे का निक़ाब किया हुआ था, चेहरा ढ़ांपा हुआ था, वह अपने बेटे के बारे में पूछ रही थी जो शहीद हो चुका था। बाज़ अस्हाबे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहने लगे ऐ उम्मे खुलाद! तुम अपने शहीद बेटे के बारे में पूछने आई हो और तुम ने इतना निक़ाब किया हुआ है। सिन्फे नाजुक़ को जब ऐसा तीर लगता है तो होंश उड़ जाते हैं ,ये ताज़ा सदमा है, इस वक़्त तुम्हे ख़बर पहुँची है कि बेटा शहीद हो गया है और तुम निक़ाब कर के इतने सब्र से आई हो ? सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम तआज्जुब से देख रहे थे , इस्लाम की बेटी सब्र का कितना बड़ा कोहे हिमाला होती है और जिसने नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सीरत के सबक़ पढ़े हैं उस का किरदार कितना सुथरा किरदार होता हे और इस हद तक उनको रब्बे जुलजलाल अज़्मतें अता फरमाता है कि उस वक़्त उन्होने ऐसा जुमला बोला कि कियामत तक की बेटियों को एक निसाब अता फरमाया।

हज़रत उम्मे खुलाद रदियल्लाहु अन्हा से जब सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम पूछ रहे थे कि तेरा बेटा शहीद हो गया है और चेहरे का इतना पर्दा इस वक़्त भी किया हुआ है और तुम इतने वक़ार के साथ पर्दे की हालत में आकर नबी ए

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपने बेटे के बारे मेर पूछ रही हो, तो हज़रते उम्मे खुलाद रदियल्लाहु अन्हा कहने लगी कि: मेरे मेहबूब के गुलामों मेरा बेटा शहीद हुआ है, मेरी हया तो शहीद नही हुई है। शहादत मेरे बेटे की हुई है, शहादत मेरी हया की तो नही हुई है। मेरे बेटे का जनाज़ा उठा, मेरी हया का जनाज़ा तो नही निकला। ये सच है कि मेरे दिल का टुकड़ा मुझ से जुदा हो गया और बेटे की शहादत की ख़बर नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुन रही हूँ, मगर उन का जो दिया हुआ सबक़ है मुझे उस से पता चल रहा है, मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का खुला चेहरा सामने हो तो बच्चे की शहादत पे बेसब्री क्यों करूँ ?

तुम्हारे दम से है आबाद मेरा गुलशने हस्ती।
जो तुम हो तो ख़ज़ाओं का कोई ख़तरा नही मुझ को।।

“या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैका वसल्लम आप के सदक़े मुझे सबकुछ मिला, आप के ज़ेरे साया इस ने जाम–ए–शहादत
नोश कर लिया” सहाबिया हैं, सिन्फे नाज़ुक़ हैं और जवाब दे रही हैं “ ऐसा मौका है तो मै अपनी हया पर पानी नही फेरूँगी, अपनी हया को बरकरार रखूँगी और जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दिया हुआ तरीक़ा है उस तरीक़े के मुताबिक़ रहूँगी। जाहिलियत के ज़माना कैसा था ? इंन्क़िलाब कैसे आया, ये बैत करने वाली ख़्वातीन उन्होने नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बैत की लाज कैसे रखी है ? ऐसे गंभीर हालात में जहाँ कलेजा मुँह को आता है और इंसान का जिगर पिघल जाता है, ये सिन्फे नाजुक फिर भी सब्र कर के क़यामत तक की इस्लाम की बेटियों को बता रही थीं कि बाद में आने वालियों! तुम को देखना है कि जिन्होने बराहे रास्त नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पढ़ा था उन का किरदार क्या है ? , हमारे किरदार को देख कर (ऐ बाद में आने वालियों) तुम को अपना किरदार संवारना है कि जब मुसीबत आ जाए तो वह मुसीबत किसी और चीज़ पर हो, तुम्हारी शर्मो हया पर मुसीबत न हो, तुम्हारे पर्दे का जनाज़ा न निकल जाए, बल्कि उस वक़्त भी पर्दे में रहकर ये साबित करो कि हम ने किसी और का कलिमा नही पढ़ा बल्कि हम ने गुंबदे ख़िज़रा के मकी का कलिमा पढ़ा है।

आज हमे ऐसे नाम–निहाद मुफक़्क़िरीन का सामना जो कहते हैं कि चेहरे का पर्दा होता ही नही है, बाकी पर्दा है चेहरे का कोई पर्दा नही । एन.जी.ओज़ में मौजूद मग़रिब–ज़दा ख़्वातीन कि जिन्होने मुख़्तलिफ दफतर खोल रखे हैं, इस्लाम की बेटियों को बेराहरवी की तरफ लगाना चाहती हैं। दूसरी तरफ ऐसे नाम–निहाद मुफक़्क़िरीन हैं कि मुआशरा पहले ही आतिश–फशां है, फिर कहते हैं कि चेहरे का कोई पर्दा ही नही है। उन के मज़हबी जुलूस में औरतें बेहिजाब टांगों पे टांगें चढ़ा के बेठी होती हैं। उन लोगों को शर्म नही आती कि कुरआनो सुन्नत की कितनी धज्जियाँ उड़ाई जा रही हैं और इधर मेरे मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नूर नगर मदीना शरीफ है कि हज़रते उम्मे खुलाद रदियल्लाहु अन्हा का बेटा भी शहीद हो चुका है मगर फिर भी चेहरा ढ़ांपा हुआ है और बताना चाहती हैं कि हम ने जिन से पर्दे के सबक़ सीखे हैं, उन्होने हमें चेहरे का पर्दा भी बताया है।

उम्मुल मोमीनीन रदियल्लाहु अन्हा का अमले मुबारक़

हज़रत ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा रदियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि हज़रत उम्मे हबीबा रदीयल्लाहु अन्हा जो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ौजा मोहतरमा हैं,

हज़रत अमीर मुआवियह रदियल्लाहु अन्हु की हमशिरह हैं, हज़रत अबू सुफियान रदियल्लाहु अन्हु की बेटी हैं, जब उन को पैग़ाम पहुँचा कि हज़रत अबू सुफियान रदियल्लाहु अन्हु फौत हो गए हैं, वफात के बाद तीसरा दिन जब गुज़र रहा था तो आप ने ज़र्द रंग की खुशबू मँगवाई और खुशबू अपने चेहरे पे लगाई और अपनी हथेलियों पे लगाई। जो औरतें आपके पास आई हुई थीं उन से कहा कि तुम ने मुझे ये काम करते हुए देखा है ? मुझे इस चीज़ की कोई ज़रूरत नही थी, मै इन खुशबुओं को पसंद नही करती थी मगर इस वक़्त मेने ये खुशबू क्यों लगाई ? फरमाती हैं कि "अगर मेने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ये न सुना होता कि जो औरत अल्लाह तआला और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती है उस के लिये हलाल नही कि वो तीन दिनों से ज़्यादा किसी पर सोग मनाए, सिवाए ज़ौज के कि अगर उस का ज़ौज फौत हो जाए तो फिर वो चार महीने दस दिन हालते सोग में रहेगी" तो कभी खुशबू न लगाती।
(सहीह बुख़ारी शरीफ)

इस के सिवा ख़्वाह वालिद फौत हो जाए, बेटा फौत हो जाए उस औरत के लिए जाइज़ नही कि सोग की हालत में रहे कहने लगी कि मेरे अब्बा जी फौत हुए थे, तीन दिन मुकम्मल हुए हैं मै खुशबू लगाकर बताना चाहती हूँ कि मेरा आख़िरत पर भी ईमान है और मेरा अल्लाह तआला पर भी यक़ीन है, मेरा रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर भी यक़ीन है। मेने सिर्फ इसलिए खुशबू लगाई है ताकि दुख़्तराने इस्लाम को पता चले कि हमारी अम्मी उम्मे हबीबा रदियल्लाहु अन्हा के अब्बा जी जब फौत हुए थे तो उन्होने नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान को पसे–पुश्त नही डाला बल्कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान को सामने रखा और फरमाया कि मुझे खुशबू लगाने की कोई हाजत न थी लेकिन खुशबू इस तरह लगाना सोग के ख़त्म करने का ऐलान है तो मै ज़र्द रंग की खुशबू लगाकर बता रही हूँ कि जो नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है उस पर अमल कर के हम साबित करना चाहती हैं कि हमने जाहिलियत की सारी रस्में छोड़ दी हैं और हम ने नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गुलामी का पट्टा गले में डाल लिया है। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने औरतों को ऐसा निसाब अता फरमाया जो कि पूरी ज़िंदगी के लिए क़ाफी है।

इस के साथ साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन की रहनुमाई फरमाई और सहाबियात ने अमल कर के दिखाया उन की मुहब्बत के नारे खोखले नही थे, नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जहाँ खड़ा कर दिया है इस्लाम की बेटी ने सारी ज़िंदगी वहीं गुज़ारी है, चुँकि यहाँ से आगे जाने को सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हराम कहते हैं तो मै सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्यार कर के आगे चली जाऊँ, ये कैसे हो सकता है ? ये सुन्नते मोतह्हरा का जज़्बा था कि जिस पर पूरी मिल्लते इस्लामिया में अगर हम नज़र दौड़ाएं तो हमें ऐसी माँएं नज़र आएंगी कि जिन्होने अपने सालेह किरदार के साथ आज तक इस्लाम की हदों पर पहरा दे के दिखाया है।

ख़ातूने जन्नत सरकारे कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वक़्ते विसाल

हज़रत सय्यिदा फातिमा रदियल्लाहु अन्हा शहज़ादी सरकारे कौनैन की हैं, रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिगर का टुकड़ा हैं, हज़रते सय्यिदा फातिमा तय्यिबा, ताहिरा, सालेहा, आबिदा रदियल्लाहु अन्हा का वक़्ते विसाल क़रीब था तो उन्होने क्या किया ?
अपना मुँह क़िबला शरीफ की तरफ फेर लिया, फिर दायां बाज़ू नीचे रखा उस के ऊपर

अपना चेहरा रख कर क़िबला की तरफ कर दिया
क़िबला की तरफ इस लिये किया कि कियामत तक जो हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा की ख़ादिमा होगी या फातिमा रदियल्लाहु अन्हा से प्यार करने वाली होगी उस को सबक़ मिल जाए कि फातिमा रदियल्लाहु अन्हा दुनिया से जा रही थी, रूह निकल रही थी, तो फिर भी आप का चेहरा क़िबला की जानिब था। वह हज़रते फातिमा रदियल्लहु अन्हा से अपनी मुहब्बत का दावा न करे जिसका सिर सजदे में झुकता ही नही। हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा की रूह निकल रही है और चेहरा क़िबला शरीफ की तरफ है और ये असर हे कि रूह निकलते वक़्त सिर क़िबला की तरफ है तो हज़रते इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हु का सिर सजदे में है। इधर सय्यिदा फातिमा रदियल्लहु अन्हा ने खुद अपना चेहरा क़िबला की तरफ किया , अपने चेहरे को दाएं हाथ पे रखा और बता दिया कि जो मिल्लते इस्लामिया की बेटियाँ हैं और मुझ से जो प्यार करने वालियाँ हैं और जो क़ियामत तक मेरा नाम लेंगी उन को अपना पैग़ाम देना चाहती हूँ कि जब तक बदन में जान हो तो फिर क़िबला की तरफ हाज़िरी हो, रब के दरबार में सजदा हो, और अल्लाह तआला को भूल कर नमाज़ के वक़्त को छोड़ न दिया जाए, अल्लाह तआला के दरबार की हाज़िरी बरकरार रखी जाए ताकि रूह जब निकल रही हो तो सिर क़िबले की तरफ झुक रहा हो।

<u>एक सवाल एक तड़प</u>

हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा का नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल और एक तड़प, जिस में इस्लाम की बेटी के लिए हज़ारों सबक़ मौजूद हैं। हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु इस के रावी हैं, हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु अपने दोस्तों को ये हदीस सुनाया करते थे और इर्शाद फरमाया करते थे कि : **मै तुम्हे अपना और हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा, जो नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहबज़ादी हैं, का एक वाक़िआ न सुनाऊँ, मै तुम्हे अपनी आप बीती न सुनाऊँ, हमारा नबी ए अकरम सल-लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ आने जाने का मामला उस के बारे में तुम्हे न बताऊँ ?** अब लोग शौक से कहते थे कि बताओ, वो कौनसी बात है कि जिस को तुम इस अंदाज़ में बयान करना चाहते हो ? हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु सुनाया करते थे किः
हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा की शख्सियत इतनी बड़ी और उन का इतना बड़ा मुक़ाम है कि जिन के घर में चक्की कभी फरिश्ते भी आ कर चलाते थे और आटा पीसते थे लेकिन उनका ख़ातूने ख़ाना होने के लिहाज़ से किरदार कितना था और वह अपने घर को कैसे चलाती थी और घर के चलाने में उन का तरीक़ा क्या था ? फरमाने लगे किः **हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा अपने घर में आटा पीसने ले लिए अपनी चक्की चलाती थी और उस चक्की की दस्ती के निशान हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा के हाथों में पड़ चुके थे।**

आज ये हदीस सुनते वक़्त दुख़्तराने इस्लाम को सोचना है कि वह फातिमा रदियल्लाहु अन्हा जो जन्नती औरतों की सरदार है, उमूरे ख़ाना में अगर उन का तक़ाज़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से होता तो सोने का घर बना दिया जाता , हज़रत फातिमा रदियल्लाहु अन्हा ने इतनी चक्की चलाई कि हाथों में निशान पड़ गए, उन्होने कुएं से मश्कीज़े इतने भरे कि जब कंधे पर रस्सा रख कर खींचती थी तो छाती पे निशान बन चुका था, अपने बच्चों के लिए और अपने घर के लिए रोज़ाना पानी के डोल कुंए से खींचती हैं। एक तरफ हाथों पे निशान हैं और दूसरी तरफ छाती पे निशान है और सीने के ऊपर के हिस्से में निशान पड़ चुके हैं। फिर हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु कहने लगे कि “और घर

में झाड़ू दिया यहाँ तक कि आप के कपड़े गर्द–आलूद हो गए।

आज के दौर में घर की सफाई एक औरत के लिए आर और शर्म है और कहती है कि दस ख़ादिमाएं हों, वह काम करें। मै घर का काम क्यों करूँगी, मै तो इतने बड़े बाप की बेटी हूँ। तो कौन है जो हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा से बड़े बाप की बेटी है– हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा उमूरे ख़ाना में कैसा किरदार अदा करती हैं।

हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा घर में झाड़ू देती थी यहाँ तक कि कपड़े गर्द–आलूद हो जाते थे। जब इतनी मुशक्कत करती थीं तो उसी दौरान हमें पता चला कि नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कुछ गुलाम और लोंडियाँ आ गई हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाब ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम में उन्हें तक़सीम करना चाहते हें । हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: "मेने कहा कि फातिमा! वक़्त अच्छा है, चलो अपने अब्बा जी के पास और एक लोंडी मांग कर ले आओ और वह तुम्हारे साथ घर में काम करे, तुम्हारा क्या हाल हो गया है घर में काम करते हुए। तुम अपने अब्बा जी के पास जा कर कोई ख़ादिमा ले आओ, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम में तक़सीम करेंगे तो हमे भी एक ख़ादिमा मिल जाएगी। हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा ने अपने शौहरे नामदार की बात मान ली। जब सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आईं तो देखा कि नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो परवानों के झुरमुट में हैं, दाएं–बाएं सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम बैठे हैं, लोग अपनी अपनी हाजत पेश कर रहे हैं, रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल पूछ रहे हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जवाब दे रहे हैं

अब देखो कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमने दीने इस्लाम को कितना टाईम दिया। वह बेटी जो जिगर का टुकड़ा है, उन को यह हौसला न हो सका कि अब्बा जी मै आई हूँ, मै बात करब्ना चाहती हूँ, उन ख़ादिमों को अपने पास से हटा दें, ये कहीं बैठ जाएं, इंतिज़ार करें, पहले मै मुलाकात कर लूँ। इस दीन ए इस्लाम को इतना प्यार दिया है मेहबूब अलैहिस्सलाम ने कि प्यारी फातिमा ये न कह सकी कि जो पास बैठे हैं उन को उठा दो और और मै अपनी बात कर लूँ। हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा कहने लगीं कि जब मेने लोगों को मसाइल पूछते देखा तो मै खुद समझ गई और मै वापस आ गई हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि दूसरे दिन मै भी हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा के साथ गया। हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दर ए पाक़ पर पहुँच गईं जब हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा वहाँ पहुँची तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि ऐ फातिमा! तुम बताओ तो क्या हाजत है ? किस काम को आई हो ? हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा ख़ामोश हो गईं हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मेने कहा कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! ये चुप करा गई हैं, मै बताता हूँ कि ये क्यों आई हैं ? हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु ने कहा कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम साहबज़ादी आप की है और आटा पीसने की चक्की इतनी चलाती है कि इन के हाथों में निशान पड़ गए हैं, इन्होने मश्कीज़े इतने उठाए हैं कि छाती पर निशान बन गए हैं। जब आप के पास इतने ख़ादिम आ गए हैं तो मेने उन (हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा) को कहा कि चलो हम भी चल के मांगते हैं। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ादिमा दे दें तो कुछ काम घर में आप करें और कुछ काम वो ख़ादिमा करे। जिस मुशक्कत में हज़रते फातिमा रदियल्लाहु

अन्हा पड़ी हुई हैं मै चाहता हूँ कि वह बड़ी मुशक्कत से बच जाएं।

अब इस में कई पहलू क़ाबिले ग़ौर हैं:

आज दामाद के बारे में कोई ससुर ऐसी बातें सुन ले तो वह कहता है कि उस ने तो मेरी बेटी को कोई सहूलत ही नही दे रखी, मेरी बेटी खुद आटा पीसती है, खुद मश्किज़े उठा रही है और खुद झाड़ू दे रही है। अपने दामाद को ससुर झिड़कियाँ देना शुरू कर दे कि ये तुमने क्या किया ? मगर मेरे मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु से एक लफ्ज़ भी ऐसा ज़िक्र नही किया और इन चीज़ों पे सुकूत बताता है कि ये काम ख़ातूने ख़ाना के हैं, अगर उस को ये करने पड़ते हैं तो इस में कोई कबाहत/ख़राबी नही है। ये काम उस ख़ातूने ख़ाना को ही करने चाहिए। हाँ! अगर किसी ख़ाविंद के पास सहूलत के मौके हैं तो वह फराहम करे।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये चीज़ें देख लीं और सरकार सल. लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा के साथ बेपनाह मुहब्बत थी। तबई तौर पर भी ये तक़ाज़ा हो सकता था कि पता ही नही चला कि इतनी मुशक्कत हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा कर रही हैं, आज के बाद ऐ फातिमा ऐसा न करना, मै अभी बंदोबस्त कर देता हूँ। वह चाहें तो जन्नत की हज़ारों हूरें हज़रते फातिम्मा रदियल्लाहु अन्हा की देहलीज़ पर आकर खड़ी हो जाएं , मगर मेरे मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जुमला क्या था ? समझते थे कि आज मै अपनी बेटी फातिमा के लिये हज़ारों हूरें तो खड़ी कर सकता हूँ मगर कल उम्मत की बेटियाँ भी तो होंगी। ऐसा निसाब दूँ कि उन उम्मत की बेटियों को भी निसाब मिल जाए। ऐसी चीज़े दूँ कि वह सिर्फ मेरे जिगर के टुकड़े को ही नही बल्कि मेरे उम्मती के जिगर–पारों को भी निसाब मिल जाए। मेरे मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के यहाँ कमी तो कोई न थी, जो फरमाते फौरन मयस्सर हो जाता और हमेशा के लिये ऐसा सिलसिला जारी हो जाता – लेकिन रसूले अकरम सल्लल. लाहु अलैहि वसल्लम के लफ्ज़ क्या हैं, ये सबक़ है उस बाप के लिये जो अपनी बेटी को ब्याह के भेजता है, जब वह अपने बाप को कुछ आ कर कहे तो वह आगे उस को क्या कहे ? बाप कैसे दिलासा दे और बाप कैसे तर्बियत करे, बाप कैसे उन ख़ानदान को आबाद र खने के लिये अपना किरदार अदा करे ? सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया किः ऐ फातिमा! खुदा से डरो। वह जो पहले ही डरने वाली फातिमा है, रात मुसल्ले पे गुज़र जाती है और दिन रोज़े में गुज़र जाता है, मुशक्कत भी करती हैं) हमारे नबी फरमाते हैं कि ऐ फातिमा खुदा से डरो! अपने रब का फरीज़ा अदा करती रहो और घर का काम ब–दस्तूर जारी रखो, जो तुम्हारे अहल का काम है, जो हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु के घर में कर रही हो, ये काम करती रहो। और तरतीब बयान कर दी कि **तक़वा**, फिर **अपने रब का फरीज़ा** और फिर **अपने शौहर की ख़िदमत**।

सय्यदा फातिमा रदियल्लाहु अन्हा को सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निसाब दे रहे हैं, अगर आप अपनी बेटी के लिए जो चाहते वह एक मिनट से भी पहले मयस्सर हो जाता, लेकिन फरमाया कि क़यामत तक फातिमा रदियल्लााहु अन्हा की ख़ादिमाएं भी आएंगी, हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा से प्यार करने वाली कनीज़ें आएंगी तो सब के लिए जामेअ निसाब हो।

ऐ फातिमा! तुम अपने रब से डरती रहो और अपने रब का फरीज़ा अदा करती रहो और फिर अपने अहल का जो काम करती हो मुसलसल करती रहो, इस में कोई

हरज नही है। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ये जुमला वालिदैन के लिए दर्से हयात है कि अपनी बेटियों को ऐसे मुआमलात में जिस वक़्त बताएं और समझाएं तो ये बातें बताएं कि एक है रब का फर्ज़, फिर है उस घर वाले का फर्ज़ और उस की ख़िदमत। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ऐ फातिमा! तुम आई हो तो तुम्हे इस वक़्त खाली नही भेजा जाएगा, तुम्हे दूँगा तो क़यामत तक की बेटियों को भी दूँगा।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इर्शाद फरमाते हैंः जब काम काज से फारिग़ हो कर नमाज़ पढ़ कर लेटने लगो तो एक काम करना। तुम्हे तैंतीस (33) मरतबा "सुब्हान अल्लाह" कहना है, तैंतीस (33) मरतबा "अल्हम्दुलिल्लाह" कहना है और चौतीस (34) मरतबा "अल्लाहु अक़बर" कहना है। मेरी बेटी इस तरह ये सौ (100) बन जाएगा। ये वज़ीफा तुम्हारे लिये ख़ादिमा से बेहतर है। वो ख़ादिमा तुम्हारे साथ इतना सपोर्ट नही करेगी जितना ये तस्बीह तुम्हारा सपोर्ट करेगी। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में इस लिए गई थी ताकि बोझ खत्म हो जाए लेकिन बज़ाहिर तो बोझ और बढ़ गया, हक़ीक़त में नही। आज जैसे लोगों का दिमाग़ हो तो कहें कि " गए थे नमाज़े बख़्शवाने, रोज़े गले पड़ गए" , हम छुट्टी लेने गए थे मुफ्ती साहब ने और लाज़िम कर दिया। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि ऐ फातिमा (रदियल्लाहु अन्हा)! तुम मुझ से ख़ादिमा मांगने आई हो , ख़ादिमा से बड़ी चीज़ दे रहा हूँ और ये तस्बीहे फातिमा है, सोते वक़्त ये तस्बीह पढ़ लिया करो ये तुम्हारे लिए ख़ादिमा से बेहतर है। यानी ख़ादिमा तुम्हारे साथ काम कर केर इतना सपोर्ट नही करेगी, ख़ादिमा के काम करने से इतनी रिलीफ नही मिलेगी, इतना सुकून नही मिलेगा जितना सौ (100) बार इस ज़िक्र से तुम्हें सुकून मिलेगा।

<u>अज़ीम बाप की अज़ीम बेटी के लफ्ज़ सुनोः</u>

ये नही कहा कि अब्बा जी मै काम कर कर के थक जाती हूँ, ख़ादिमा लेने आई थी, आप ने और लाज़िम कर दिया। क्या शान है हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा की, कहने लगीं कि मेहबूब तुम्हारी फातिमा रब से भी राज़ी है और रब के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी राज़ी है। हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा के कौल के मुताबिक़ ये ऐ मेरे अब्बा जी! ये ज़हन में ख़्याल न लाना कि बच्ची आई थी, उस ने मांगा था और जो उस ने मांगा था मेने वह नही दिया, मेरे अब्बा जी मै अपनी तरफ से इज़हार करती हूँ कि "मै रब से भी राज़ी हूँ और रब के नबी से भी राज़ी हूँ दोनों बातों का बतौरे ख़ास ज़िक्र कर के इस बात को कयामत तक आने वाली उम्मत की बेटियों को बताया कि ऐ दुख़्तराने इस्लाम! जहाँ रब का नाम ज़बान पर आना चाहिए वहाँ रब के मेहबूब का नाम भी ज़बान पर आना चाहिए और ये कहो कि मै रब से भी राज़ी हूँ और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी राज़ी हूँ।

ऐसे मुक़ाम पर अल्लाह तआला ये एजाज़ अता फरमाता है कि जिस वक़्त एक इंसान ऐसे फैसलों पे राज़ी होता है और ये कुरआने मजीद का फैसला है । आज इतना वबाल आ चुका है और इतनी नाम–निहाद रौशन ख़यााली ने मर्दो–ज़न के मूँह खोल दिये हैं कि जब कहा जाता हृ कि ये शरीआत है और ये कुरआनो सुन्नत है, तो आगे से जवाब कई किस्म के मिलते हैं। कोई कहता है कि "नही! हमारा भी हक़ है" , "आख़िर अक्ल की भी कोई मांग है" , "आख़िर ज़िंदगी भी कुछ गुज़ारना है" , "आख़िर दुनिया भी कुछ कहती है"– इस तरह की बातें सामने आती हैं,

मगर इधर कुरआने मजीद कहता है कि:

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّ لَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗۤ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ

(कुरआन :सूरह अहज़ाब, आयत नंबर 36)

(तर्जुमा ए कंजुल ईमानः–और न किसी मुसलमान मर्द न मुस्लमान औरत को पहुँचता है कि जब अल्लाह व रसूल कुछ हुक़्म फरमा दें तो इन्हें अपने मुआमले का कुछ इख़्यिार रहे।)

जब अल्लाह तआला फैसला कर दे और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फैसला कर दें तो किसी मोमिन और मोमिना के लिए ये जाइज़ नही कि वह आगे अपनी ज़बान खोले, बल्कि चुप हो जाए, सर तस्लीमे–ख़म कर दे कि जो सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है, जो शरीअत में आ गया है, जो कुरआने मजीद ने कह दिया है, उस की पाबंद हूँ। मै किसी फैशन–परस्त औरत की बात नही सुनुँगी, मै किसी मग़रिब–ज़दा ख़ातून के जाल में नही आऊँगी, मै किसी दुनिया की लीडर के फैशन की तरफ नही देखूँगी, मेरे सामने मेरे रब का कुरआन है और मेरे नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो मुख़्तलिफ सबक़ दिये हैं उन में से एक घर के अंदर रहना और ज़िंदगी का सफर तै करना है– आज अल्लाह तआला हर बन्दे के घर को शरीअत का रंग अता फरमाए। लोग आकर ऐसी ऐसी दास्तानें बयान करते हैं कि इंसान सुन के हैरान रह जाता है कि कलिमे का असर कितना बाकी है– ऐसी ऐसी खुराफात औरतों में आ गईं, ऐसे ऐसे फैशन , ऐसी ऐसी हिमाक़तें औरतों में आ गईं हैं कि अक्ले सलीम भी उन चीज़ों की इजाज़त नही देती। आज इस्लाम की बेटी को रिमाईंड करना है कि उस ने कलिमा किस का पढ़ा था ? कलिमा ए इस्लाम पढ़ते वक़्त कहा था कि अब मर्ज़ी अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चलेगी, मेरी कोई मर्ज़ी नही चलेगी। या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो आप कहें वही मेरी शरीअत, जो आप का फैसला वही मेरा लाईफ कोड और मेरी ज़िंदगी का निसाब होगा। मगर राहे ज़िंदगी में चलते चलते भूल गई। कभी किसी सनम खाने में, कभी किसी फैशन–कदे में और कभी किसी ब्यूटी–पार्लर में और कभी किसी फैशन–शो में और कभी किसी मेले–ठेले में। उसे याद न रहा कि मेने क्या अहद किया था और कलिमा क्या पढ़ा था ?

औरत और लिबास

حَدَّثَنَا صَدَقَةُ، أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ هِنْدٍ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، وَعَمْرٍو، وَيَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ هِنْدٍ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، قَالَتِ اسْتَيْقَظَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم ذَاتَ لَيْلَةٍ فَقَالَ " سُبْحَانَ اللَّهِ مَاذَا أُنْزِلَ اللَّيْلَةَ مِنَ الْفِتَنِ وَمَاذَا فُتِحَ مِنَ الْخَزَائِنِ أَيْقِظُوا صَوَاحِبَاتِ الْحُجَرِ، فَرُبَّ كَاسِيَةٍ فِي الدُّنْيَا عَارِيَةٍ فِي الآخِرَةِ ".

मेरे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया , इस को हज़रते उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं:

عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، قَالَتِ اسْتَيْقَظَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم ذَاتَ لَيْلَةٍ فَقَالَ " سُبْحَانَ اللَّهِ →
हज़रते उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे हुजरे में थे। एक रात बेदार हुए और फरमाया "सुब्हान अल्लाह"।

मेरे नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निगाह है, बैठे तो हजरते उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा के हुजरा ए मुबारक़ में थे मगर उठते ही फरमाया– "सुब्हान अल्लाह"। "सुब्हान अल्लाह" कहने का मतलब क्या था, वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

مَاذَا فُتِحَ مِنَ الْخَزَائِنِ → "आज की रात कितने ख़ज़ाने खुल गए"
नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को बेदार हो कर "सुब्हान अल्लाह" ख़ज़ानों के खुलने पर कह रहे हैं।
फरमाया **"कितने ख़ज़ाने मेरी उम्मत के लिए खुल गए"** और साथ ही इर्शाद फरमाया कि
مَاذَا أُنْزِلَ اللَّيْلَةَ مِنَ الْفِتَنِ → "कितने फितनों के दरवाज़े खुल गए"
इस के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि
أَيْقِظُوا صَوَاحِبَاتِ الْحُجَرِ، → " हुजरों वालियों को जगाओ"
इस के बाद सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया और क़यामत तक की दुख़्तराने इस्लाम को सबक़ दिया कि :–
فَرُبَّ كَاسِيَةٍ فِي الدُّنْيَا عَارِيَةٍ فِي الآخِرَةِ → " बहुत सी औरतें दुनिया में जो (बारीक़) लिबास पहनने वाली हैं, हश्र में नंगी होंगी"

(सहीह बुख़ारी शरीफ باب الْعِلْمِ وَالْعِظَةِ بِاللَّيْلِ हदीस नंबर 115)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस जुमले के तीन मतलब हैं:

1. बहुत सी औरतें दुनिया के अंदर महलों में रह रही हैं, उन के बीस–बीस, चालीस–चालीस सूट हैं, हर फंक्शन में जाने का अलग सूट है, बड़े नाज़ और बड़े नखरे हैं। यही औरतें आज जिन को दूसरे फंक्शन में पहला वाला कपड़ा पहन कर जाना पसंद नही, क़यामत के दिन बदन पर एक इंच कपड़ा भी नही होगा। इस की वजह क्या है ? उन का किरदर ऐसा है कि उन्होने मेरी शरीअत को छोड़ दिया , फैशन को अपना इमाम बना लिया, कलिमा रिवाज का पढ़ लिया।

فَرُبَّ كَاسِيَةٍ فِي الدُّنْيَا → बड़े–बड़े नवाबों की बीवियाँ, बड़े–बड़े जागीरदारों की बीवियाँ , बड़े–बड़े मालदारों की बीवियाँ जिन से दुनिया में कपड़े संभाले नही जाते, इतने ज्यादा सूट हैं मगर अमल से इतनी कोरी हैं कि कपड़ा तो तक़वा का कपड़ा है, कपड़ा है तो परहेज़गारी का, कपड़ा है तो सुन्नते नबवी का जो आज वो कपड़ा पहनेगी कल क़यामत के दिन भी पर्दे में होगी और आज जिस ने वो कपड़े छोड़ दिये, आज जिस ने शरीअत की तरफ पीठ कर ली, और आज जिस ने शरीअत की नमाज़ को छोड़कर अपने फैशन को पेशे–नज़र रखा और समझती है कि हफ्ते में दूसरा सूट नही होगा तो मेरी इज़्ज़त नही होगी। ये इज़्ज़त के बारे में सोचती है जबकि हश्र में ये नंगी हो चुकी होगी। दुनिया में

बहुत से सूट पहनने वाली आख़िरत में नंगी हो चुकी होगी मेरी शरीअत से गद्दारी करने की वजह से, मेरी शरीअत को छोड़ने की वजह से उन्हें ये अंजाम देखना पड़ेगा।

इस का मतलब ये नही कि कपड़े ज्यादा पहनना जाइज़ नही। अल्लाह के दिये हुए माल को खर्च करना जाइज़ है और नेअमत का इज़हार भी जाइज़ है मगर उस नेअमत में रब को भूल जाना, उस नेअमत के नशे में शरीअत की तौहीन करना और शरीअत को पसे–पुश्त डाल कर शैतान का खिलौना बन जाना, इस की हदीस में मज़म्मत हो रही है और इसराफ (फुज़ूल–खर्ची) की मज़म्मत हो रही है। दुनिया में बहुत सी औरतें ऐसी हैं जिनके सूट गीने नही जा सकते मगर क़यामत के दिन एक इंच कपड़ा मयस्सर नही होगा और बिल्कुल नंगी हो चुकी होगी। उनको सोचना चाहिए कि ऐसी शर्मिंदगी का उन को सामना क्यों करना पड़ रहा है ? लिहाज़ा आज किरदार सही करें ताकि दुनिया में भी पर्दे में रहें और उक़बा में भी पर्दे में रहें।

2. दूसरा मतलब है कि "दुनिया में कपड़ा उलटने वाली आख़िरत में नंगी होगी, इस का मानी ये है कि दुनिया में कपड़े पहनती है मगर बहुत तंग पहनती है जिन से आज़ा (बदन के हिस्से) पहचाने जाते हैं और जिस्म के आज़ा की शिनाख़्त हो सकती है, वह ये नही दे खती कि शरीअत ने पर्दा लाज़िम किया है, और शरीअत ने पर्दे का हुक्म दिया है। वह ये कहती है कि अब नया फैशन आया है। कपड़ा सिमट सिमट के, कम हो हो कर , इंसानी बदन पर तंग होते होते, बाज़ू पीछे हटते हटते, दामन सिमटते सिमटते ये सूरते हाल बन गई है कि वह कपड़े पहने हुए भी यूँ ही हो गई जैसे नंगी होती है। क़यामत के दिन बता दिया जाएगा कि उन्होने कुछ नही पहना। ये बाज़ारों में नंगियाँ चलती थी, ये रिश्तेदारों के पास दुनिया में नंगियाँ आती थीं, क्योंकि उन के लिबास टाईट थे, कपड़े तंग थे, जिन से बदन के मुख़तलिफ आज़ा पे कपड़ा नहि होता था, वो आज़ा नंगे होते थे, उन का अंजाम ये होगा कि अल्लाह तआला उन औरतों को नंगी औरतों में शुमार करेगा कि ये वो हैं कि जिन्होने दुनिया में हमारे हुक्म की पाबंदी नही की और उन का अंजाम उन औरतों के साथ होगा मग़रिब के सहराओं में मौजूद क्लबों में होती हैं, जहाँ कोई लिबास नही पहनता, उन के साथ उन का हश्र होगा इस बुनियाद पर कि कपड़े न खुले थे न पूरे थे बल्कि अधूरे और टाईट थे। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि हम उस को कपड़ा शुमार नही करेंगे, हमारे नज़दीक वो औरत नंगी है, अगर वह चाहती है कि कल उस को वक़ार मिले तो फिर उस को अपने कपड़े खुले रखने चाहिए और पूरे बदन को ढ़ापने वाले कपड़े मौजूद होने चाहिए।

3. तीसरा मानी मुहद्दिसीन कहते हैं कि " كَاسِيَةٍ " का मानी कपड़ा पहनने वाली और " عَارِيَةٍ " का मआनी नंगा होना है। दूसरी हदीस में है कि कुछ औरतें कासिया–आरिया हैं, आख़िरत से पहले ही वो औरतें कपड़े पहन के भी नंगी हैं। मतलब क्या है ?................ नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि वो इतने बारीक़ कपड़े पहनती हैं कि जिस से बदन का रंग नज़र आता है।

अब कौनसा घर बचा होगा ? कहाँ पाबंदी हो रही होगी ? मेरे नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस जुमले पे कौन पेहरा दे रहा होगा ? कहाँ इस बात का एहतिमाम किया जा रहा होगा ? मेरे मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं

कि जिस ने पतला कपड़ा पहना कि जिस से बदन का रंग नज़र आ रहा हो, मै उस को कपड़े वाली नही कहता, मै उस को नंगी कहता हूँ। सरकार फरमाते हैं कि वह नंगी है, उस ने कपड़े नही पहने। पतला कपड़ा ख़ातून का लिबास नही है। पतला कपड़ा शरीअत में कपड़ा शुमार नही होता है। कपड़े खरीदते वक़्त दुख़्तराने इस्लाम को सोचना चाहिए कि जिस रब ने हमें नमाज़ का हुक़्म दिया है, उसी रब ने कपड़े का भी हुक़्म दिया है, और नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जैसे नमाज़ की रकअतें बयान फरमाईं हैं, ऐसे ही कपड़े की किस्में भी बयान फरमाई हैं और मेरे मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्यार का तक़ाज़ा ये है कि आज इस्लाम की बेटी वह कपड़े पहने जो शरीअत चाहती है यानी जिस से बदन की नुमाईश न हो और न ही बदन की शिनाख़्त हो सके और न ही पतला कपड़ा हो। सही कपड़ा पहन कर ये साबित करे कि मै शरीअते मुतह्हरा की पाबंद हूँ और पूरे पर्दे के साथ जिस वक़्त वह एहतिमाम करने वाली है तो नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस के लिए सत्तर (70) सिद्दीक़ों से बड़े सवाब का ऐलान फरमाया है।

इस सोसायटी में मै आप के साथ हूँ। यानी कोई इस बुनियाद पर आप से नही बात कर रहा कि मेरा अमल तुम से कहीं आगे है और अच्छाई में कहीं मै तुम से आगे हूँ, नही! नही! मै भी आप ही की तरह इन हदीसों का इल्म तलब करने वाला हूँ, मुझ से मुआख़िज़ा होगा और मेरी कोशिश है कि मुकम्मल तौर पर इस पर अमल होना चाहिए और ये ही दर्द बाँटना हमारा मंशूर है कि उम्मत जिस वक़्त भूलती जा रही है, हक़ के रास्ते से बिखरते जा रही है और बिल–खुसूस वह जो पाक मुक़ामात हैं, जहाँ से नसलें आबाद होती हैं।

औलाद का पहला सबक़

हज़रते उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा की बायोग्राफी को बयान किया जाए तो आज की दुख़्तराने इस्लाम हैरान रह जाएंगी। हज़रते उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा का निक़ाह "मा. लिक़" के साथ हुआ था जो कि एक मुश्रिक था। जब हज़रते उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा ने कलिमा ए इस्लाम पढ़ा तो "मालिक़" सफर पर था। हज़रते अनस रदियल्लाहु अन्हु की विलादत हो चुकी थी। "मालिक़" जब वापस आया तो उसे पता चला कि मेरी बीवी ने कलिमा ए इस्लाम पढ़ लिया है, "मालिक़" ने अपनी बीवी से कहा कि "क्या तू दीन छोड़ गई है ?"

उस वक़्त ये लफ्ज़ बोला जाता था कि तुमने दीन छोड़ दिया है, तुम साब्या बन गई हो यानी पुराना बाप–दादाओं वाला दीन छोड़ दिया। तो हज़रते उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा के कहा कि मै साब्या नही बनी बल्कि **"मै तो ईमान लाई हूँ"**।

हज़रते अनस रदियल्लाहु अन्हु जिस वक़्त बड़े हुए और बोलना शुरू किया तो सबसे पहले हज़रते उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा ने अपने बेटे को कलिमा पढ़ाया **" ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"**, जब हज़रते अनस रदियल्लाहु अन्हु बोलने लगे तो हज़रते अनस रदियल्लाहु अन्हु को तलक़ीन करती हैं कि कहो **" मै गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माअबूद नही और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल. लाह के आख़िरी रसूल हैं"**–

अब तसव्वुर करो कि घराना मुश्रिक का ,घर वाली कलिमा ए इस्लाम पढ़ गई है और बेटा दोनों का है, मगर हज़रते उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि मेरे बेटे कहो **" ला**

इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह "— हज़रते अनस रदियल्लाहु अन्हु के वालिद मुश्रिक थे, उस ने आख़िर तंग आकर हज़रते उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा से कहा कि " खुद खराब हो गई हो तो मेरा बेटा खराब मत करो,मेरे बेटे का सत्यानास करना चाहती हो, बुतों का मज़हब छोड़ कर उसे नए दीन में दाख़िल करना चाहती हो, खुद तो कलिमा पढ़ गई हो लेकिन इस से ऐसी बातें मत करो, उस से वज़ीफा करवाना चाहती हो कि अनस कह " ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह "— "मालिक़" ने जिस वक़्त झगड़ा किया तो हज़रते उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा ने कहा कि जिसे तू फसाद समझता है ये फसाद नही है, ये तो वह दीन है जो पूरी दुनिया पे छाने वाला है। फिर "मालिक़" हालते शिर्क में ही मर गया।

अजीब हक़ महर:

अब इस के बाद हज़रते अबू तलहा़ अंसारी रदियल्लाहु अन्हु ने निका़ह का पैग़ाम भेजा, वह भी अभी मोमिन नही हुए थे। हज़रते अबू तलहा़ अंसारी मदीना शरीफ में बहुत बड़े जम.ीनदार थे। मस्जिदे नबवी शरीफ के साथ जो पहला बाग़ था वह हज़रते अबू तलहा़ अंसारी रदियल्लाहु अन्हु का था। हज़रते अबू तलहा़ अंसारी ने निका़ह का पैग़ाम भेज दिया और वह अभी हालते कुफ्र में थे तो हज़रते उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा ने कहा कि मेरी एक शर्त है और मेरा वही हक़ मेहर है, उस के सिवा न कुछ माँगूंगी और न और हक़ मेहर है। तो हज़रते अबू तलहा़ अंसाारी रदियल्लाहु अन्हु ने कहा कि तुम क्या हक़ मेहर चाहती हो ? कितने बाग़ात, कितना सोना चाहिए ? तो हज़रते उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा कहने लगीं कि " ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह " मेरा हक़ मेहर है, तुम कलिमा ए इस्लाम पढ़ जाओ तो मै तुम से शादी कर लूँगी।

यानी ये मेयार (साँचे) थे उन ख़्वातीन के और ये अंदाज़ था और इस अंदाज़ में वो आगे बढ़ी हैं तो अल्लाह तआला ने क़दम क़दम पे उनको अज़मतें अता फरमाई हैं। हज़रते अबू तलहा़ अंसारी रदिइयल्लाहु अन्हु ने जब ये जुमला सुना तो एक मिनट भी नही लगने दिया कहने लगे " जो तेरा रब है वही मेरा रब है, जो तेरे नबी हैं वही मेरे नबी हैं" । मै कहता हूँ "अश्हदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्ना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"

↳(हवाला: तबक़ाते कुबरा, जिल्द 8)

बीन की मुमानअत (मनाही)

ये मुख़्तसर सा इन्ट्रोडक्शन था। इस्लाम की अपनी बेटियों से गुफ्तगू हालते मर्ग़ में हो या हालते खुशी में, जैसे भी हालात हों, उस में इस्लाम के ख़ास निसाब हैं। अगर उस पर दुख़्तरे इस्लाम क़ायम नही रहती तो उसके लिए सख़्त वईद है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि

وَقَالَ " النَّائِحَةُ إِذَا لَمْ تَتُبْ قَبْلَ مَوْتِهَا تُقَامُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَعَلَيْهَا سِرْبَالٌ مِنْ قَطِرَانٍ وَدِرْعٌ مِنْ جَرَبٍ " .

" जो औरत बीन करती हो और मरने से पहले तौबा न करे, उस को तारकोल का लिबास पहनाया जाएगा और ख़ारिश की ज़िरह पहना दी जाएगी, उस ने वक़्ते मर्ग़ शरीअते मोतह्हरा का ख़याल क्यों नही रखा" (सहीह मुस्लिम शरीफ)

<u>शादी की तक़रीबात और दुक्ख़्तराने इस्लाम</u>

शादी की तक़रीब में किसी ख़ातून का पर्दे में जाकर शरीअते मोतह्हरा के मुताबिक़ वापस आना, इतना बड़ा अमल है कि जब रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि कुछ औरतें और बच्चे शादी में शिर्कत कर के वापस आ रहे हैं तो रसूले अकरम सल. लल्लाहु अलैहि वसल्लम जल्दी से खड़े हो गए कि ये औरतें और बच्चे शादी से शिर्कत कर के वापस आ रहे हैं तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसलम ने फरमाया कि **" पूरी रूए ज़मीन पर इस वक़्त जितना मुझे तुम से प्यार है इतना मुझे और किसी से प्यार नही है**

(सहीह बुख़ारी शरीफ)

आख़िर वह कितना बड़ा अमल है कि जिस पर नबी ए अकरम सल्लल. लाहु अलैहि वसल्लम ने ये लफ्ज़ बिल दिये हैं कि तुम मेरे नज़दीक़ पसंदीदा–तरीन लोगों में से हो कि तुम शादी में शिर्कत कर के वापस आ रहीं हो और तुम्हारे बच्चे भी वहाँ शिर्कत कर के वापस आ रहे हैं। अगर वहाँ भंगड़े हों, डाँस हो, ख़ुराफात हो और वहाँ बेहयाई हो, वहाँ म्यूज़िक हो और इस तरह के तमाशे हों तो ये सारे जहन्नम के काम हैं–

नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि

" पूरी रूए ज़मीन पर इस वक़्त जितना मुझे तुम से प्यार है इतना मुझे और किसी से प्यार नही है "

यानी आप ने वाज़ेह कर दिया कि एक इस्लाम की बेटी को शादी में जाते वक़्त सोचना चाहिए कि वह सवाब कमाने जा रही है, गुनाह लेने नही जा रही है। फिर उस को पता चलेगा कि मुझे शादी के फंक्शन में कैसे शिर्कत करना है और शादी के मराहिल को किस अंदाज़ में तैय करना है ?

मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला नबी ए पाक़ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अज़ीम मरतबा के तुफैल
शरीअते मोतह्हरा पे अमल की तौफीक़ अता फरमाए।
आमीन